



भारत-जापान के संबंधों में नए आयाम

sanskritiias.com/hindi/news-articles/new-dimensions-in-indo-japanese-relations

(प्रारंभिक परीक्षा: राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय महत्त्व की सामयिक घटनाओं से संबंधित मुद्दे)
(मुख्य परीक्षा: सामान्य अध्ययन प्रश्नपत्र- 2: भारतीय हितों पर विकसित तथा विकासशील देशों की नीतियों एवं राजनीति का प्रभाव, द्विपक्षीय, क्षेत्रीय और वैश्विक समूह अथवा भारतीय हितों को प्रभावित करने वाले करार, भारत एवं इसके पड़ोसी- देशों से संबंधित मुद्दे)

संदर्भ

- हाल ही में जापान के नए प्रधानमंत्री योशिहिदे सुगा ने अमेरिका की आधिकारिक यात्रा की। इस यात्रा का निहितार्थ पूर्व प्रधानमंत्री शिंजोआबे द्वारा आरंभ की गई विदेशनीति को आगे बढ़ाना था।
- कोविड-19 महामारी** के प्रकोप में कमी आने के बाद जापानी प्रधानमंत्री भारत की आधिकारिक यात्रा करेंगे। जिसमें दोनों देशों के द्विपक्षीय संबंधों को और अधिक मजबूत बनाने एवं विभिन्न पहलुओं पर विचार किया जाएगा।

जापान-अमेरिका गठजोड़

- जापानी प्रधानमंत्री तथा अमेरिका के राष्ट्रपति ने चीन की आक्रामक नीति के खिलाफ अपनी नीति को ओर सख्त बनाने की बात की।
- दक्षिण चीन सागर तथा पूर्वी चीन सागर के संदर्भ में चीन की एकतरफा आक्रामक नीति को संतुलित करने के लिये जापान-अमेरिका-भारत-आस्ट्रेलिया के मध्य बने गठबंधन क्वाड को मजबूत कर चीन को संतुलित करने का प्रयास किया जाएगा।
- दोनों देश, चीन पर उसकी बौद्धिक संपदा अधिकार नीति को सुधारने के लिए दबाव बनाते रहेंगे।
- वार्ता के दौरान चीन द्वारा मानवाधिकारों के उल्लंघन, शिनजियांग प्रांत में रहने वाले उईगर मुसलमानों तथा हॉन्गकाँग के विरुद्ध उसके आक्रामक रवैय के खिलाफ दबाव बनाने के प्रयास पर भी चर्चा हुई।
- हिंद-प्रशांत महासागरीय क्षेत्र में नेविगेशन को मजबूत किये जाने के प्रयासों को सुनिश्चित किया जायेगा।
- नई उभरती तकनीक (New Emerging Technology) जैसे- 5G, क्वांटम तकनीक में दोनों देश अपने निवेश को बढ़ाकर चीन की एकाकी प्रभाव को कम करेंगे।
- चीन के व्यापारिक नीति के अंतर्गत निर्यात संवर्धन हेतु मुद्रा के अवमूल्यन द्वारा अन्य देशों के व्यापार को प्रभावित करने के प्रयासों को रोकने के लिए भी दोनों देशों ने प्रतिबद्धता दर्शाई है।

भारत-जापान हालिया संबंधों की पृष्ठभूमि

- अगस्त 2000 में जापानी प्रधान मंत्री योशीरो मोरी की भारत यात्रा ने जापान-भारत संबंधों को मजबूत करने के लिए गति प्रदान की। श्री मोरी और प्रधान मंत्री अटल बिहारी वाजपेयी ने "जापान और भारत के बीच वैश्विक साझेदारी" की स्थापना का निर्णय लिया।
- अप्रैल 2005 में जापानी प्रधान मंत्री जुनिचिरो कोइजुमी की भारत यात्रा के बाद से ही संबंधित राजधानियों में जापान-भारत वार्षिक शिखर बैठकों की शुरुआत हुई। इसी क्रम में, दिसंबर 2006 में जब प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह ने जापान का दौरा किया, तो जापान-भारत संबंध "वैश्विक और सामरिक साझेदारी" से आगे बढ़े।
- भारतीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने सितंबर 2014 में जापान की आधिकारिक यात्रा कर द्विपक्षीय संबंधों को "विशेष रणनीतिक और वैश्विक भागीदारी" के परिप्रेक्ष्य में और आगे बढ़ाया।
- उल्लेखनीय है कि दिसंबर 2015 में जापानी प्रधानमंत्री अबे ने भारत की आधिकारिक यात्रा की और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के साथ एक शिखर बैठक की। दोनों प्रधानमंत्रियों ने जापान-भारत विशेष रणनीतिक और वैश्विक साझेदारी को एक गहरी, व्यापक-आधारित और एकाग्र-उन्मुख साझेदारी में बदलने का संकल्प लिया, जो उनके दीर्घकालिक राजनीतिक, आर्थिक और रणनीतिक लक्ष्यों के व्यापक अभिसरण को दर्शाता है।
- उन्होंने "जापान और भारत विजन 2025 विशेष रणनीतिक और वैश्विक साझेदारी के साथ-साथ शांति और समृद्धि के लिए इंडो-पैसिफिक क्षेत्र और विश्व" के लिए एक संयुक्त वक्तव्य की घोषणा की, जो जापान-भारत संबंधों में नए युग के लिए एक मार्गदर्शक के रूप में काम करेगा।
- नवंबर 2016 में, भारतीय प्रधानमंत्री की आधिकारिक यात्रा के दौरान जापानी प्रधानमंत्री के साथ आयोजित शिखर बैठक को जापानी प्रधानमंत्री ने शानदार बैठक का दर्जा दिया, जिसने "जापान-भारत संबंधों के एक नए युग" को काफी उन्नत किया।
- हाल ही में, अक्टूबर 2018 में भारतीय प्रधानमंत्री की जापान यात्रा के दौरान जारी जापान-भारत विजन स्टेटमेंट में, दोनों नेताओं ने एक स्वतंत्र और खुले भारत-प्रशांत क्षेत्र में साथ मिलकर काम करने की अपनी अटूट प्रतिबद्धता को दोहराया।

सुरक्षा क्षेत्र में सहयोग

- वर्ष 2008 में भारतीय प्रधानमंत्री की जापान यात्रा के दौरान, दोनों नेताओं ने "जापान और भारत के बीच सुरक्षा सहयोग पर संयुक्त घोषणा" जारी की।
- हाल की शिखर बैठकों में, दो नेताओं ने द्विपक्षीय सुरक्षा और रक्षा सहयोग संस्थान को मजबूत बनाने की अपनी इच्छा की पुष्टि की तथा विदेश और रक्षा मंत्रियों की बैठक (2 + 2), अधिग्रहण और क्रॉस-सर्विसिंग समझौते (ACSA) पर वार्ता शुरू होने का स्वागत किया।
- वर्ष 2019 के नवंबर माह में नई दिल्ली में विदेश और रक्षा मंत्रियों की पहली बैठक आयोजित की गई थी।

आर्थिक संबंध

- हाल के वर्षों में, जापान और भारत के बीच आर्थिक संबंधों में लगातार विस्तार हुआ है। साथ ही द्विपक्षीय व्यापार में भी वृद्धि हुई है।
- भारत जापान के लिए 21वाँ सबसे बड़ा व्यापारिक भागीदार था, जो वर्ष 2019 में भारत के लिए 12वाँ सबसे बड़ा व्यापारिक भागीदार बन गया।

- इसके अलावा, जापान से भारत आने वाले प्रत्यक्ष निवेश में भी वृद्धि दर्ज की गई है, और वित्त वर्ष 2019 में जापान भारत के लिए चौथा सबसे बड़ा निवेशक बन गया था।
- जापानी निजी क्षेत्र की भी रुचि भारत में बढ़ रही है, वर्तमान में लगभग 1,454 जापानी कंपनियों की शाखाएँ भारत में मौजूद हैं।
- हाल की शिखर बैठकों ने समृद्ध भविष्य के लिए भारत-जापान आर्थिक साझेदारी की वास्तविक क्षमता का एहसास करने के लिए भारत के जनसांख्यिकीय लाभांश और जापान की राजधानी और प्रौद्योगिकी के बीच तालमेल की प्रतिबद्धता को फिर से जोड़ दिया है।
- इस संबंध में, दोनों देशों ने 75 बिलियन अमरीकी डालर की द्विपक्षीय स्वैप व्यवस्था, एक व्यापक भारत-जापान डिजिटल साझेदारी की शुरुआत और अन्य सहयोग और पहलों के समझौते का स्वागत किया।

आर्थिक सहायता

- भारत पिछले दशकों में जापानी आधिकारिक विकास सहायता (Japan's official development assistance-ODA) का सबसे बड़ा प्राप्तकर्ता रहा है। दिल्ली मेट्रो ODA के उपयोग के माध्यम से जापानी सहयोग के सबसे सफल उदाहरणों में से एक है।
- जापान अपनी 'एक्ट ईस्ट' नीति और 'क्वालिटी इन्फ्रास्ट्रक्चर के लिए साझेदारी' के बीच तालमेल के माध्यम से दक्षिण एशिया को दक्षिण पूर्व एशिया से जोड़ने वाली रणनीतिक कनेक्टिविटी का समर्थन करेगा।
- भारत ने वर्ष 2015 में शिंकांसेन प्रणाली शुरू करने का फैसला किया था। जापान की शिंकांसेन प्रणाली अपनी सुरक्षा और सटीकता के मामले में दुनिया भर में हाई-स्पीड रेलवे सिस्टम की एक उच्चतम श्रेणी में से एक है। जापान और भारत ने पुष्टि की कि इसका परिचालन वर्ष 2023 में शुरू होगा।

सांस्कृतिक संबंध

- वर्ष 2012 ने जापान और भारत के बीच राजनयिक संबंधों की स्थापना की 60वीं वर्षगाँठ को चिह्नित किया। "रिसर्जेंट जापान, वाइब्रेंट इंडिया: न्यू पर्सपेक्टिव्स, न्यू एक्सचेंज" विषय के तहत दोनों देशों के बीच आपसी समझ को बढ़ावा देने के लिए जापान और भारत दोनों में विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रम हुए।
- नवंबर 2016 में भारतीय प्रधानमंत्री की जापान यात्रा के दौरान, वर्ष 2017 को जापान-भारत मैत्रीपूर्ण आदान प्रदान का वर्ष घोषित किया गया।
- वर्ष 1957 में सांस्कृतिक समझौते के लागू होने के बाद से वर्ष 2017 की 60वीं वर्षगाँठ को भी चिह्नित किया गया। इस मौके पर दोनों देशों में विभिन्न स्मारक कार्यक्रम हुए।

जापानी प्रधानमंत्री की भारत यात्रा के दौरान बातचीत के मुद्दे

- वर्ष 2014 में दोनों देशों के प्रधानमंत्रियों के साथ शुरू हुई चीन के खिलाफ संतुलन सुरक्षा नीति की निरंतरता की उम्मीद की जा सकती है।
- भारतीय प्रधानमंत्री के साथ एक फोन कॉल के दौरान, श्री सुगा ने चीन के "एकतरफा" कार्यों पर चिंता व्यक्त की साथ ही पूर्व और दक्षिण चीन सागर, शिनजियांग प्रांत और हॉन्गकाँग के साथ चीन के रैवये को लेकर बात की। गालवान घाटी की घटना के बाद से भारतीय सार्वजनिक राय चीन के विरुद्ध गम्भीर रूप से आक्रामक वाली बनी हुई है।

- केवल एक दशक में, नई दिल्ली और टोक्यो ने उच्च-मंत्रिस्तरीय और नौकरशाही संपर्कों का विस्तार किया है।
- संयुक्त सैन्य अभ्यास किया और अधिग्रहण तथा क्रॉस-सर्विसिंग समझौते (एसीएसए), रसद समझौते, सैन्य समझौते किए गए।
- मोदी-सुगा की बैठक, नियोजित 2 + 2 मंत्रिस्तरीय बैठकों के साथ, रक्षा संबंधों को एक नए आयामों तक ले जाने का लक्ष्य रखेगा, जबकि रक्षा प्रौद्योगिकी और निर्यात पर अभी भी सहयोग को आगे बढ़ाया जाएगा।
- दोनों शक्तियाँ साइबर सुरक्षा और उभरती हुई प्रौद्योगिकी जैसे क्षेत्रों में सहयोग के विस्तार पर बात कर सकते हैं।
- शिंजो आबे के कार्यकाल के दौरान, नई दिल्ली और टोक्यो के मध्य एक डिजिटल अनुसंधान और नवाचार साझेदारी को स्थापित किया गया था, जो कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) और 5G से इंटरनेट ऑफ थिंग्स और अंतरिक्ष अनुसंधान के लिए प्रौद्योगिकियों के सहयोग को आगे बढ़ाएगा।
- यूएस-जापान शिखर सम्मेलन के साथ, भारतीय एवं जापानी प्रधानमंत्री, अनुसंधान संस्थानों के बीच सहयोग को गहरा करने और चीन के उक्त प्रौद्योगिकी निवेश कार्यक्रम के मद्देनजर वित्त पोषण का विस्तार करने पर भी बातचीत कर सकते हैं।
- यह अभी स्पष्ट नहीं है कि जापानी प्रधानमंत्री बुडापेस्ट कन्वेंशन जैसे वैश्विक साइबर सुरक्षा समझौतों को लेकर भारत के प्रधानमंत्री से बातचीत करेंगे।
- आर्थिक संबंध और बुनियादी ढाँचा विकास, नई दिल्ली और टोक्यो की बातचीत के एजेंडों में शीर्ष स्थान पर रहने की संभावना है।
- जापान ने पिछले दो दशकों में भारतीय अर्थव्यवस्था में लगभग 34 बिलियन डॉलर का निवेश किया है, जापान भारत का 12वाँ सबसे बड़ा व्यापारिक भागीदार है।
- मोदी-सुगा शिखर सम्मेलन में 'मेक इन इंडिया' और 'जापान औद्योगिक टाउनशिप' जैसी प्रमुख विनिर्माण पहलों के लिए जापान के समर्थन की पुष्टि की जा सकती है।
- इसके अलावा, भारत वर्तमान में पूर्वोत्तर और अंडमान और निकोबार द्वीप समूह में रणनीतिक रूप से महत्वपूर्ण कनेक्टिविटी परियोजनाओं में जापान के निरंतर बुनियादी ढाँचे में निवेश को जारी रखने के लिए प्रयास करेगा।
- सुगा-मोदी शिखर सम्मेलन निस्संदेह अन्य प्रमुख देशों और बहुपक्षीय निकायों के लिए एक संयुक्त रणनीति के विकास पर विशेष बल देगा।
- पिछले वर्षों में, नई दिल्ली और टोक्यो ने ईरान और अफ्रीका में बुनियादी ढाँचे के निर्माण में सहयोग किया है। म्यांमार और श्रीलंका को महत्वपूर्ण सहायता प्रदान की है और चीन के बढ़ते प्रभाव को कम करने के प्रयास में दक्षिण पूर्व एशियाई राष्ट्रों की आउटरीच नीति का समर्थन किया है।
- हालाँकि, दोनों देशों द्वारा अफ्रीका और ईरान में प्रारंभ की गई बुनियादी ढाँचा निर्माण परियोजनाओं में विलंब के कारण उनकी लागत में वृद्धि हो रही है। अतः दोनों देश इन परियोजनाओं के समयबद्ध समाप्ति पर भी विचार कर सकते हैं।
- नई दिल्ली को बड़े पैमाने पर व्यापार में शामिल नहीं होने के अपने फैसले को पलटने की कोशिश में 'क्षेत्रीय व्यापक आर्थिक भागीदारी' (RCEP) पर टोक्यो अपने आकर्षण को बनाए रखने की संभावना को भी जारी रखेगा।

निष्कर्ष

वर्ष 2006 में शिंजो आबे ने अपनी पुस्तक 'उतसुकुशी कुनी ई' (टूवर्ड ए ब्यूटीफुल कंट्री) में लिखते हुए, अपनी आशा व्यक्त की थी कि "यह आश्चर्य की बात नहीं होगी यदि अगले 10 वर्षों में, जापान-भारत संबंध जापान-अमेरिका और जापान-चीन से आगे निकल जायें"। इस प्रकार, यह कहा जा सकता है कि भारत-जापान संबंध अधिक मजबूती के साथ उभरकर सामने आयेंगे।